नाथपंथः योग, अध्यात्म एवं साधना

भारत का सामाजिक–धार्मिक जीवन अत्यन्त समृद्ध है। भारत के सामाजिक–धार्मिक जीवन की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता युग–धर्म के अनुसार स्वयं शुद्धिकरण की है। अर्थात् भारतीय धर्म–संस्कृति दुनिया की ऐसी अद्वितीय धर्म–संस्कृति है जिसमें काल–प्रवाह के साथ रूढ़िगत पाखण्डों एवं कालवाह्य परम्पराओं के शुद्धिकरण, युगानुकूल परिवर्तन–परिवर्धन की आवाज अनवरत अपने समाज के अन्दर से उठती रही है। परिणामतः पुरातन के साथ आधुनिकता का समन्वय होता रहता है और भारतीय संस्कृति की मूलधारा किसी न किसी रूप में युगानुकूल होते हुए प्रवाहित होती रही है। पूर्व वैदिक युग का विकास उत्तर वैदिक युग है। तत्पश्चात् तथ्य, प्रमाण, तर्क, दर्शन एवं प्रश्न के साथ उपनिषद सामने आते हैं और वैदिक युग की अनेक मान्यताओं, परम्पराओं, धार्मिक कर्मकाण्डों को युगानुकूल बनाते हैं, कुछ का खण्डन करते है, कुछ नयी दार्शनिक अवस्थापनाओं की प्रतिष्ठा करते हैं। वैदिक संस्कृति पर आधारित औपनिषदिक युग की विकास यात्रा में जब विकृतियाँ रूढ़ हुई, पाखण्ड को प्रतिष्ठा मिलने लगी, धार्मिक कर्मकाण्ड एवं यज्ञ दुरुह एवं इतने व्यय साध्य हो गए कि सामान्य जनता के लिए उसका सम्पादन कठिन हो गया तो सामान्य जन की आवाज बनकर कपिलवस्तु के शाक्य राजपरिवार के राजकुमार सिद्धार्थ महात्मा बुद्ध के रूप में तथा वज्जिसंघ के युवराज वर्धमान महावीर के रूप में अभ्युदित हुए और बौद्धमत तथा जैनमत के रूप में वैदिक संस्कृति की मूल–धारा पुनः परिष्कृत होकर आगे बढ़ी। बौद्धमत, जैनमत के साथ–साथ शैव, वैष्णव, शाक्त, पांचरात्र, कापालिक, पाशुपत इत्यादि विविध धार्मिक मत इस बात के ही प्रमाण हैं कि भारतीय धर्म–संस्कृति में स्वतः शुद्धिकरण हेतु मत–मतान्तर को पर्याप्त महत्त्व प्राप्त था और समय–समय पर विविध पांथिक मतों का अभ्युदय तथा उनका उत्थान–पतन स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा था। नाथपंथ का अभ्युदय भी भारतीय संस्कृति की इसी विशिष्टता की देन है।

बौद्धमत एवं समकालीन अन्य विविध धार्मिक पंथों, उपासना पद्धतियों में विकृतियों तथा पाखण्डों को जब प्रतिष्ठा मिलने लगी, भारतीय समाज के वर्ण–जाति के विभाजन में ऊँच–नीच का भाव जन्म लेने लगा तो इनके विरूद्ध दक्षिण भारत से आदि शंकराचार्य तथा उत्तर भारत से महायोगी गोरखनाथ ने सामाजिक पुनर्जागरण का अभियान आरम्भ किया। महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ ने पूर्व से प्रचलित नाथपंथ को पुनर्ज्जीवन देकर नए विचार एवं दर्शन के साथ नवीन स्वरूप में प्रतिष्ठित कर भारतीय समाज को नयी दिशा दी। स्पष्ट है कि नाथपंथ भारतीय संस्कृति की मूल वैदिक संस्कृति में प्रवाहित विविध आध्यात्मिक धाराओं में योग आध ाारित एक विशिष्ट पांथिक धारा थी जिसके प्रर्वतक आदिनाथ अर्थात् शिव माने जाते हैं।

आदिनाथ से योग केन्द्रित आध्यात्मिक देशना का ज्ञान योगी मत्स्येन्द्रनाथ ने प्राप्त किया। मत्स्येन्द्रनाथ से योग की विद्या गोरखनाथ ने प्राप्त की तथा गोरखनाथ ने योग–विद्या को अपनी साधना से और अधिक समृद्ध कर इसे भारत के आध्यात्मिक–सामाजिक पुनर्जागरण का आधार बनाया। आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित यह पंथ इन्ही योगियों का नामान्त के आधार पर नाथपंत के नाम से विख्यात हुआ। नाथपंथ को सिद्धामत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योग सम्प्रदाय, अवधूत–मत, अवधूत सम्प्रदाय इत्यादि नाम से भी जाना जाता है।

महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ का उल्लेख पुराण संहिता, तन्त्रशास्त्र, स्कन्दपुराण, नाथपंथ के ग्रन्थों, कौलज्ञान निर्णय, कश्मीरी शैवागम तन्त्रालोक की टीका, वर्णरत्नांकर, तिब्बती–नेपाली अनुश्रुतियों इत्यादि में प्राप्त होता है। नाथपंथ की परम्परानुसार मत्येन्द्रनाथ नाथपंथ के प्रथम आचार्य एवं

कश्मीरी कौल सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं। मत्स्येन्द्रनाथ का अविर्भाव मध्य युग के एक ऐसे युगसन्धिकाल में हुआ जब अनेक आध्यात्मिक–साधना के मत प्रवर्तित हो रहे थे और उनमें से कई पर मत्स्येन्द्रनाथ का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रभाव था।

मत्स्येन्द्रनाथ ने तान्त्रिक साधना–पद्धति का योग–करण कर शक्ति उपासनापरक योगिनी कौलमत का प्रवर्तन किया। योग साधना में शिव और शक्ति के सामरस्य का सिद्धान्त समझाया। इसी शिव–शक्ति के एकाकार दर्शन से कालान्तर में शैवदर्शन में शिव के अर्द्धनारीश्वर स्वरूप का विकास हुआ। शिव–शक्ति एक ही प्रतिमा में पूजे जाने लगे। योग दर्शन के प्रकाश में सिद्ध–मत का पोषण किया। मत्स्येन्द्रनाथ ने अनात्मवाद के विवर्त में ग्रस्त वैदिक विचार और आध्यात्मिक चिन्तन का योग–मार्ग अथवा सिद्ध–मत द्वारा पुनरूद्धार किया तथा आत्मा से परमात्मा का जीव से शिव का शाश्वत योग सिद्ध किया।

नाथपंथ के इस आचार्य ने वैदिक युग से चली आ रही योग विद्या को अनुभव–सिद्ध किया। योग को समाजोपयोगी बनाने की दिशा में पहल की। योग के बल पर परकाया प्रवेश जैसे आत्मा के अलौकिक स्वरूप का दर्शन कराया और आत्मा के अस्तित्त्व को प्रमाणित किया। योग के बल पर जीवन–मरण की गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न किया। योग की अनेक विधाएं प्रचलित की। लोककल्याण एवं लोकमंगल हेतु योग को जन–जन तक पहुॅचाने की दृष्टि दी। योग को व्यावहारिक एवं अनुभवजन्य धरातल दिया।

समस्त नेपाल में मत्स्येन्द्रनाथ को अप्रतिम सम्मान प्राप्त है। बारह वर्ष के भयंकर अकाल और अनावृष्टि से उत्पीड़ित नेपाल को जलवृष्टि से प्राणान्वित करने का श्रेय उन्हें प्राप्त है। नेपाल नरेश नरेन्द्रदेव ने उनकी इस स्मृति को बनाए रखने हेतु ही नेपाल में रथयात्रा एवं महास्नानयात्रा उत्सव प्रारम्भ किया जो अनवरत जारी है। नाथपंथ के महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ भारत–नेपाल सम्बन्धों की भी एक मजबूत कड़ी हैं।

साधनात्मक रहस्यवाद के व्यावहारिक व्याख्याता मत्स्येन्द्रनाथ ने जीवन में ही जीवन–मुक्त हो जाने की अद्‌भुत शिक्षा दी। अज्ञानान्धकार से परम–प्रकाश के चरम पर ले जाने वाले इस महायोगी की पारमार्थिक दक्षता, पारलौकिक कुशलता, लौकिक विलक्षणता तथा लोकमंगलकारी दृष्टि ने योग का सहज–सरल बनाने के उस मार्ग को प्रशस्त किया जिस पर चलकर गुरु श्री गोरखनाथ ने नाथपंथ का पुनर्गठन किया और उसे जन–सामान्य का मुक्ति–पथ बना दिया।

महायोगी मत्येन्द्रनाथ के शिष्य गुरू श्री गोरखनाथ ने उनकी योग–साधना का सम्बर्धन किया। नाथपंथ को पुनर्गठन किया तथा नाथपंथ की साधना को भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का आधार बनाया। हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं– विक्रम संवत की दसवीं शताब्दी में भारतवर्ष के महान गुरु गोरक्षनाथ का आविर्भाव हुआ। शंकाराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भक्ति आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन गोरखनाथ का योग–मार्ग ही था। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसमें गोरक्षनाथ सम्बन्धी कहानियाँ न पाई जाती हों।..... गोरक्षनाथ अपने युग के सबसे महान धर्मनेता थे। उन्होंने जिस धातु को छुआ वही सोना हो गया।

महायोगी गोरक्षनाथ की संगठन–शक्ति अपूर्व थी। उनका चरित्र स्फटिक के समान उज्ज्वल, बुद्धि भावावेश से एकदम अनाविल और कुशाग्र तीव्र थी। गोरक्षनाथ ने निर्मम हथौड़े की चोट से साधु और गृहस्थ दोनों की कुरीतियों को चूर्ण विचूर्ण कर दिया। लोक जीवन में जो धार्मिक चेतना अपने परमार्थिक उद्‌देश्य से विमुख हो रही थी उसे गोरक्षनाथ ने नयी प्राणशक्ति से अनप्राणित किया। हर प्रकार की रूढ़ि पर चोट की, उन्होंने किसी से भी समझौता नहीं किया, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं, परन्तु फिर भी उन्होंने समस्त प्रचलित साधना मार्ग से उचित भाव ग्रहण किया।

कहा जाता है कि ज्वाला देवी के मन्दिर से खिचड़ी माँगने निकले गोरखनाथ का मन अचिरावती (राप्ती)

के तट पर सुरम्य वन क्षेत्र में आकर ठहर गया और यहीं वे तपस्यारत हो गए। उन्हीं के नाम पर वर्तमान गोरखपुर नगर बसा। उसी तपस्थली पर आज श्री गोरक्षनाथ मन्दिर का गगनचुम्बी शिखर उस महायोगी के विराट व्यक्तित्व की उपस्थिति का एहसास कराते हैं। अखण्ड धुना एवं अखण्डदीप आज भी गोरखनाथ की योग–साधना की अमरता का संदेश दे रहीं हैं।

मत्येन्द्रनाथ से योग–दर्शन का ज्ञान प्राप्त कर गोरखनाथ ने नाथपंथ को पुनर्ज्जीवन प्रदान किया। एक प्रकार से नाथपंथ की प्रभावी नींव डाली और योगियों के साथ–साथ जन–सामान्य को दुःख से मुक्ति का वह मार्ग दिखाया जो सहज था, सरल था, सुगम था, सर्वस्पर्शी था, सर्वसुलभ था, बोधगम्य था। ऐसे वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया जिस पर एक तरफ जहाँ मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन जैसे प्रभावशाली धार्मिक–सामाजिक क्रान्ति ने जन्म लिया तो दूसरी तरफ असम्भव माने जाने वाले हिन्दू–मूस्लिम एकता की प्रबल धारा के रुप में भारत में सूफीमत के एक नए संस्करण का जन्म हुआ। भारत के सामाजिक जीवन में व्याप्त ऊँच–नीच, छुआ–छुत, जाति–पाति विभेद सहित सभी सामाजिक–धार्मिक रूढ़ियों के विरूद्ध गोरखनाथ तनकर खड़े हुए। लौकिक–पारलैकिक जीवन में स्वस्थ रहने से लेकर मुक्ति पाने तक के सर्व–सुलभ मार्ग के रुप में 'योग' को प्रतिष्ठित करने वाले गोरखनाथ ने भारत के सामाजिक–धार्मिक जीवन को ऐसा रास्ता दिखाया जिस पर पाखण्ड एवं आडम्बर जगह ही नहीं पा सकते। यह योग मार्ग व्यक्ति, समाज, धर्म, राष्ट्र को एकाकार स्वरूप में ग्रहण करता है और सबको साथ लेकर चलने का हिमायती है।

गुरू शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। प्राचीन काल में ज्ञान परम्परा मौखिक होने के कारण गुरू शिष्य परम्परा का अति महत्त्व था। भारत की सभी ज्ञान–परम्पराओं में गुरू–शिष्य परम्परा प्रतिष्ठित हुई। नाथ पंथ में भी गुरू–शिष्य परम्परा का अभ्युदय इसी स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा था। किन्तु योग–प्रधान इस आध्यात्मिक पांथिक परम्परा में गुरू का महत्त्व बढ़ता गया। महायोगी मत्येन्द्रनाथ एवं गुरू श्री गोरखनाथ क्रियात्मक योग के प्रणेता है। नाथ पंथ के योगियों ने योग को व्यावहारिक धरातल प्रदान किया। योग को सीखने में सिद्वान्त से अधिक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रभावी है। अनुभव युक्त सि़द्वान्त पढ़कर अभ्यास में उतारना अत्यन्त कठिन है। नाथपंथ सिद्व–मत है, योग–मत है। नाथ पंथ में योगी योगाभ्यास गुरू से सीखते हैं। महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ एवं गुरू श्री गोरक्षनाथ से गुरू–शिष्य की अद्वितीय परम्परा अनवरत बनी हुई है। नाथपंथ में महायोगी गोरखनाथ ने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ को कदलीवन के माया–जाल से मुक्त कराया था। गोरखनाथ का ''जाग मछन्दर गोरख आया'' संदेश आज भी नाथपंथ के गुरु एवं शिष्य परम्परा का अद्वितीय उदाहरण है। नाथपंथ की गुरु–शिष्य परम्परा में आज भी यह देखा जाता है कि गुरु अपने शिष्य को ध्यान से सुनता है, गुनता है और उसका सच सहर्ष स्वीकार करता है।

महात्मा बुद्ध के बाद भारत में सामाजिक पुनर्जागरण का शंखनाद महायोगी गोरखनाथ ने किया। महायोगी गोरखनाथ ऐतिहासिक युग में भारतीय इतिहास के पहले तपस्वी हैं, जो विशुद्व योगी एवं तपस्वी होते हुए भी सामाजिक–राष्ट्रीय चेतना का नेतृत्त्व किया। उन्होने नाथपंथ का पुनर्गठन ही सामाजिक पुनर्जागरण के लिए किया। पारलौकिक जीवन के साथ–साथ भौतिक जीवन का सामन्जस्य बिठाने वाले इस महायोगी ने भारतीय समाज में सदाचार, नैतिकता, समानता एवं स्वतन्त्रता की वह लौ प्रज्ज्वलित की जिसकी लपटें जाति–पाति, ऊँच–नीच, छुआ–छूत, भेद–भाव, अमीरी–गरीबी, पुरुष–स्त्री, विषमताओं तथा क्षेत्रीयतावाद जैसी प्रवृत्तियों को निरन्तर जलाती रहीं। नाथपंथ के विचार–दर्शन ने एक ऐसी योगी–परम्परा को जन्म दिया जिसने भारतीय संस्कृति के एकाकार सामाजिक चिन्तन की प्रतिष्ठा को ही अपना मिशन बना दिया। महायोगी गोरखनाथ से लेकर महन्त अवेद्यनाथ से होते हुए महन्त योगी आदित्यनाथ तक नाथपंथ की इस योगी–परम्परा ने हर प्रकार की सामाजिक बुराइयों का खुलकर प्रतिकार किया। महायोगी गोरखनाथ ने वर्ण–व्यवस्था अथवा जातिव्यवस्था

के श्रेष्ठतावादी सिद्धान्त को चुनौती दी एवं सभी वर्णों एवं जातियों को एक समान घोषित किया। महन्त अवेद्यनाथ इस परम्परा के आधुनिक अन्तिम ब्रह्मलीन धर्म–गुरु थे। उनका पूरा जीवन जाति व्यवस्था में छुआ–छूत एवं ऊँच नीच के खिलाफ संघर्ष करते बीता। गाँव–गाँव मे सहभोज, हिन्दू समाज में तथाकथित अछूत माने जाने वाले दलितों के साथ स्वयं तथा सबको बैठाकर भोजन करने का अभियान तब चलाया जब भारतीय समाज में जातिवादी प्रवृत्तियॉ सामाजिक–विखण्डन की ओर तेजी से बढ़ रही थीं। सभी राजनीतिक दल अपने–अपने वोट–बैंक की चिन्ता में सच बोलने तक का साहस नहीं कर पा रहे थे। सन्त–महात्मा शास्त्रीय परम्परा की दुहाई देकर मौन थे।

पटना रेलवे स्टेशन के सामने श्री हनुमान मन्दिर को स्थापित करने वाले एक महात्मा को दलित होने के कारण उस मन्दिर के महन्त की स्वीकार्यता नहीं मिल पा रही थी, महन्त अवेद्यनाथ ने नाथ पंथ के सामाजिक–समरसता का शंखनाद करते हुए वहाँ स्वयं जाकर उस महात्मा को महन्त पद पर अभिषिक्त किया और सामाजिक स्वीकार्यता दिलायी। वाराणसी मे अछूत माने जाने वाले डोम राजा के घर जाकर न केवल स्वयं भोजन किया अपितु अपने साथ बड़ी संख्या में साधुसमाज को भोजन कराया। श्रीराम जन्म भूमि पर भव्य मन्दिर के शिलान्यास की पहली ईंट कोई तथाकथित 'अछूत' रखे, यह प्रस्ताव दिया, प्रस्ताव स्वीकृत कराया और दुनिया को बता दिया कि भारतीय समाज में छुआ–छूत एंव ऊँच–नीच की कुप्रवृत्तियों के दिन लद चुके हैं।

नाथपंथ की परम्परा में दुनिया का सर्वोच्च नाथपंथी केन्द्र गोरखनाथ मन्दिर का कपाट हमेशा सभी के लिए खुला रहता है। श्री गोरक्षपीठ के भण्डारे का चौखट हर भूखा बिना किसी भेद–भाव एंव पूछ–ताछ के साथ पार करता है और एक साथ भोजन रुपी प्रसाद प्राप्त करता है। गोरक्षपीठ के सभी महन्त बिना किसी भेद–भाव के समाज में सभी के यहाँ सभी के साथ पानी पीते हैं, भोजन करते हैं तथा अपने भण्डारे में भी सभी के साथ भोजन प्रसाद ग्रहण करते हैं। अनवरत चलने वाले नाथ पंथी सामाजिक पुनर्जागरण का ही प्रभाव एवं परिणाम है कि नाथ पंथी योगियों में भारतीय समाज के सभी वर्गों–जातियों के लोग दीक्षित हैं।

नाथपंथ के सामाजिक पुनर्जागरण का अहर्निश गतिमान रथ का पहिया निरन्तर चल रहा है। वर्तमान महन्त योगी आदित्यनाथ गरीबों, असहायों, पीड़ितों, दलितों के अत्यन्त प्रिय धर्मनेता भी हैं और जननेता भी हैं। नाथ पंथ का यह योगी जब उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले रहा था तों नाथपंथ की सामाजिक–पुनर्जागरण की भूमिका से अनभिज्ञ होने के कारण ही दुनिया के राजनीतिक पण्डित आश्चर्य चकित थे। वह यह समझ नहीं पा रहे थे कि एक भगवाधारी सन्त 'सबका साथ–सबका विकास' मंत्र में कैसे फिट हुआ। किन्तु नाथपंथ के सामाजिक–पुनर्जागरण अभियान के जानकार भारतीय राजनीति का यह करवट लेना बखूबी समझ रहे थे।

भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले मध्युगीन भक्ति आन्दोलन की राह नाथपंथ योगियों ने गढ़ी। कबीर, सूर, तुलसी से लेकर मीराबाई तक की भक्ति–धारा का प्रवाह नाथपंथ की वैचारिकी एवं योग के क्रियात्मक स्वरूप से प्रस्फुटित हुयी थी। यद्यपि कि भक्ति आन्दोलन में सब कुछ नाथपंथ जैसा ही नहीं था तथापि नाथपंथी ज्ञान और योग की साधना से ही भक्ति का स्वर फूटा। मध्ययुगीन भक्ति की उत्पत्ति योग की भूमि में ही सम्भव हुई। समस्त मध्यकालीन भक्ति–साहित्य महायोगी गोरखनाथ एवं नाथपंथ की साहित्यिक चेतना से प्रतिबिम्बित है। मध्यकालीन कोई भी ऐसा सन्त कवि नहीं, जो मन की एकाग्रता विषयक प्रसंग में गुरु गोरखनाथ का स्मरण न करता हो। वह सगुण हो या निर्गुण, कृष्ण काव्य हो या रामकाव्य, सूफी की प्रेम रस–साधना हो या निर्गुणियों का ज्ञानमार्ग हो, सर्वत्र गोरखनाथ अपने योग दर्शन के रुप में उपस्थित हैं। **हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते है कि** भक्तिवाद के पूर्व निसन्देह यह (नाथपंथ) सबसे प्रबल मतवाद था। इसीलिए भक्तिवाद में इनके शब्द और मुहावरे ही नहीं, इनकी पद्धति भी बहुत कुछ आ गयी।

परशुराम चतुर्वेदी ने लिखा है कि सन्तों की ''साखियों'' तथा बानियों' के पूर्वरुप हमें नाथपंथियों की ''सबदियों'' तथा 'जोगेसुरी' बानियों में दीख पड़ते हैं, जिनके विषय लगभग एक ही ढंग के है।

महायोगी गोरखनाथ सर्वसमाज के नेता और पथ प्रदर्शक थे। वे भूमिजात और दलित, शासक और शासित, सम्पन्न और विपन्न सबके गुरु थे। नेपाल, तिब्बत, म्यांमार, भूटान के साथ–साथ पश्चिमोत्तर में हिन्दुकुश की पहाड़ियों से लेकर पूर्व में समुद्र तक समस्त भूभाग पर राजवंशों से लेकर अछूत और अन्त्यज कहे जाने वाले वर्ग की झोपड़ियों तक गोरख का डंका बजा। महायोगी गोरखनाथ के योगदर्शन ने अपने समकालीन भक्तिमार्गी सन्तों की धारा मोड़ दी। उनके योग के प्रभाव के आगे शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, रामानन्दाचार्य आदि आचार्यों की भक्ति–धारा धूमिल पड़ गयी थी। यदि ऐसा न होता तो तुलसीदास को यह स्वीकारोक्ति न करनी पड़ती कि–**'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग'।** कबीरदास, सुन्दरदास, मलूकदास, निरंजनी सम्प्रदाय के सन्त हरिदास, दुखहरन दास जैसे सन्तों ने गुरु गोरखनाथ के प्रति जगह–जगह पर श्रद्धा प्रकट की है। सूरदास सहित सभी कृष्ण भक्त कवियों को महायोगी गोरखनाथ के योग–प्रभाव के कारण ही उद्धव और गोपियों में संवाद के माध्यम से योग तथा भक्ति को अपनी गीतों, कविताओं का आधार बनाना पड़ा। दादूपंथी सन्तों की वाणियों के संग्रह ग्रन्थ 'सर्वंगी' में गोरखनाथ, भरथरी, चर्पटनाथ और गोपीनाथ की बानियाँ भी संगृहीत हैं। अघोरपंथ को तो नाथपंथ की ही एक शाखा के रुप मे देखा जाता है।

नाथपंथ में गुरु का अन्यतम् स्थान है। नाथपंथ में प्रतिष्ठित यह गुरु महिमा भक्ति–आन्दोलन के सन्तों, भक्तों ने भी यथावत स्वीकार किया। कबीर ने गुरु को गोविन्द से बड़ा कहा और तुलसीदास ने उन्हें आँखों में ज्योति देने वाला बताया। नाथ योगियों द्वारा शिव,शक्ति, विष्णु तथा उनके सभी अवतार पूजे जाते हैं। वस्तुतः गुरु महिमा, ईश्वर उपासना के साथ–साथ नाथपंथी योगियों द्वारा चरित्र की पवित्रता, इन्द्रिय संयम, हृदय की सच्चाई, फक्कड़पन की मूल आधारशिला पर भक्ति आन्दोलन का भवन खड़ा हुआ।

नाथपंथ ने निडर, समरस और सुखी समाज की रचना को लक्ष्य बनाया। आत्मतत्त्व के बोध से सात्त्विक, आध्यात्मिक जीवन को आदर्शरुप में प्रस्तुत किया। सर्व समाज को सज्जन, सन्तोषी, संयमी, स्नेहशील, अपरिग्रह और समभाव युक्त होने को उपदेश दिया। नाथपंथ का जादू सिर चढ़कर बोला और कबीर, नानक, दादू, मलूक, दरिया साहब, असमी के माधव कन्दली, उड़िया के बलरामदास, बंगाली के कृतिवास की रचनाओं में नाथपंथ की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ने लगी। वही साधना, वही शब्दावली, वही सात्त्विक–नैतिक जीवनादर्श सन्त–काल की पूरी परम्परा में दिखाई पड़ता है। कबीर से मीरा तक की सन्त–परम्परा नाथपंथ से प्रभावित है। महाराष्ट्र का वारकरी सम्प्रदाय अपना मूल नाथपंथ के आदिनाथ से मानता है। मुकुन्दराज और ज्ञानेश्वर अपने को आदिनाथ से जोड़ते हैं। सन्त नामदेव भी नाथयोग से प्रभावित हैं। तमिल सिद्ध कवियों के सिद्धान्त नाथसिद्धों से मिलते–जुलते हैं। कन्नड़ का मध्यकालीन साहित्य नाथ योग से प्रभावित है। यह परम्परा गोरखनाथ को कर्नाटक का ही मानती है। मलयालम में मध्यकालीन भक्ति साहित्य को नाथपंथ ने बहुत गहरे जाकर प्रभावित किया है। मलयालम के महान कवि मध्यकालीन आचार्य तुन्तच्चु एवुत्तच्छन (1526ई0) के तीन प्रतिष्ठित रचनाओं महाभारत, श्रीमद्भागवत् तथा चिन्तारत्न में स्थान–स्थान पर नाथ योग के तत्त्व लक्षित होते हैं। उड़िया एवं बांग्ला में भी नाथसाहित्य की रचना प्रचुर मात्रा में हुयी है। सम्पूर्ण सन्त साहित्य पर नाथपंथी योगियों का जबर्दस्त प्रभाव दिखता है। नाथपंथ ने भक्ति आन्दोलन के आध्याात्मिक चिन्तन को प्रभावित किया। नाथमत एवं सन्तमत एक ही सांस्कृतिक प्रवाह की पूर्ववर्ती एवं परवर्ती कड़िया हैं।

नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ और मध्ययुगीन महान सन्त कबीरदास को एक साथ पढ़ने वाले जानते हैं कि दोनो के विचार, दर्शन और रचनाएँ एक दूसरे से ऐसी गुँथी हुयी हैं, मानो पूरक हों। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है– कबीर आदि निर्गुण मतवादी सन्तों की वाणियों की बाहरी रूप–रेखा पर विचार किया जाए

तो मालूम होगा कि यह बौद्धधर्म के अन्तिम सिद्धों और नाथपंथी योगियों के पदादि से उसका सीधा सम्बन्ध है। वे ही पद, वे ही राग–रागिनियाँ, वे ही दोहे, वे ही चौपाइयाँ कबीर आदि ने व्यवहार की हैं जो उक्त मत (नाथपंथ) को मानने वालो के पूर्ववर्ती सन्तों ने की थीं। क्या भाव, क्या भाषा, क्या अलंकार, क्या छन्द, क्या पारिभाषिक शब्द सर्वत्र वे ही कबीरदास के मार्गदर्शक है। यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि विचार में कबीर गोरखनाथ के ही मध्ययुगीन संस्करण हैं। कबीर भी गोरखनाथ को स्वीकारते हैं। कबीर स्वयं लिखते हैं–

गोरखनाथ न मुद्रा पहिरी मस्तक नहीं मुड़ाया।
ऐसा भगत भया भू उपरि गुरु पैं राज छुड़ाया।।

सन्त कबीर तथा उनके परवर्ती अन्य सन्तों की बानियों में ऐसी अनेक बाते हैं जो नाथपंथ में पूर्व से थीं। गोरखनाथ की भाँति कबीर ने भी शुद्ध आचरण पर बल दिया। गोरखनाथ की तरह ही कबीर मन की शुद्धि को साधना हेतु आवश्यक मानते हैं। विशेषतः गुरु के महत्त्व, साधना–पद्धति, तत्त्वचिन्तन, रहस्यानुभूति, नैतिक और सामाजिक मूल्य तथा भाषा–शैली में गोरखनाथ एवं कबीर में अद्‌भुत साम्य है। कबीर ने भी नाथ योगियों की भाँति मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। गोरख एवं कबीर दोनों मे चोट करने वाली शब्दावली प्रयुक्त है। उलटवासियों की रचना नाथ–योगियों की ही हैं, जिसे कबीर आगे बढ़ाते हैं। कबीर की कई उलटवासियाँ ठीक उसी प्रकार की हैं, जिस प्रकार गोरखनाथ की हैं। प्रतीक शैली का प्रयोग नाथपंथी योगियों की तरह ही कबीर ने भी किया है। अनेक स्थलों पर गोरखनाथ और कबीर के कथनों में गजब का साम्य है।

उदाहरण देखे– **हिन्दू आषैं राम कौं मुसलमान खुदाई।**
जोगी आषैं अलख कौं, तहॉ राम अछै न खुदाई।।
–गोरखनाथ

हिन्दू मूये राम कहि मुसलमान खुदाई।
कहैं कबीर सो जीवता, दुई में कदे न जाई।।
–कबीर

सामाजिक रूढ़ियों–विकृतियों के खिलाफ कबीर महायोगी गोरखनाथ की तरह ही तनकर खड़े हुए। हर सामाजिक विकृतियो पर कबीर ने करारी चोट की। पाखण्ड और आडम्बर के खिलाफ खुलकर बोले। महायोगी गोरखनाथ जिस प्रकार भारत में जाति व्यवस्था की विकृतियों की खिलाफत की उसी प्रकार कबीर यह कहते दिखते हैं कि जाति न पूछो साधु की, पूछ लिजिए ज्ञान। काशी में मुक्ति के खिलाफ कबीर ने महायोगी गोरखनाथ की तपस्थली के सटे मगहर को अपनी मुक्ति का स्थान चुना। बाहरी धर्माचारों को अस्वीकार कर अपार साहस लेकर गोरख की तरह ही कबीर साधना के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए।

स्पष्ट है कि महायोगी गोरखनाथ ने जिस वैचारिक धरातल पर नाथपंथ को खड़ा किया आगे चलकर कबीर उसी वैचारिक धरातल पर खड़े दिखाई देते हैं। नाथपंथ द्वारा सामाजिक कुरीतियों–विकृतियों के खिलाफ जो आवाज उठाई गई कबीर ने उसी सुर में सुर मिलाया। नाथपंथ और कबीरपंथ की इन समानताओं से यह साफ हो जाता है कि कबीर नाथपंथ से अतिशय प्रभावित थे। नाथपंथ की योग–साधना पूर्णतः साध न पाने के कारण कबीर एवं उनका पंथ नाथपंथ से भिन्न दिखता है।

महायोगी गोरखनाथ के नाथपंथ का विस्तार बहुत था। इस हिन्दू योगी के नाथपंथ का द्वार हिन्दू हो मुसलमान सभी के लिए खुला था। नाथपंथ के योगी सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध अपना योग और सामाजिक समरसता का मंत्र लेकर हर द्वार पर गए, चाहे वह द्वार किसी भी महजब को मानने वाले का हो,

किसी विचार–दर्शन स्वीकार करने वाले का हो, किसी भी उपासना पद्धति को जीने वालो का हों। गोरखनाथ ने हिन्दुओं के साथ–साथ इस्लामी समाज को भी रूढ़ियों–कुरीतियों के विरूद्ध तनकर खड़ा होने का उपदेश दिया। योग की जीवन–धारा पर चलकर मुहम्मद साहब के उपदेशों को सही सन्दर्भों में समझने का संदेश दिया। महायोगी गोरखनाथ के यही उपदेश एवं संदेश आगे चलकर कबीर–रहीम देते हुए दिखायी देते हैं।

गोरखबानी में नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ कहते हैं– हे काजी। परमात्मा के सन्देश वाहक रसूलमुहम्मद साहब के विचार बड़े ही निगूढ़ और रहस्यपूर्ण थे। उनके पवित्र शब्दों का रहस्य अत्यन्त मार्मिक है। मुहम्मद साहब ने तो भगवत् प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया, उन्होंने जीव–हिंसा का प्रतिपादन नहीं किया।उनके हाथ में जो छूरी (शस्त्र)थी, वह लोहे या इस्पात की बनी हुयी नहीं थी, वह तो प्रेम से निर्मित दिव्य शब्दों की शक्ति थी।–

महमंद महमंद न करि काजी महंमद का विषम विचारं।
महमंद हाथि करद जे होती लोहै घड़ी न सारं।।

गोरखनाथ आगे कहते हैं कि हे काजी। इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने अपने शब्दों में शुद्ध अध्यात्म का प्रतिपादन किया, उनके आध्यात्मिक दिव्य सदुपदेशों से जीवात्मा की भौतिक एवं मायिक आसक्ति का नाश होता है तथा आत्म–शक्ति प्राप्त होती है। सदुपदेश अथवा शब्द की ओट लेकर स्थूल बुद्धि से उनकी नकल करने से उद्देश्य सिद्ध नहीं होगा। तुम्हारे तो शरीर में वह बल नहीं है, जो आध्यात्मिक बल कहा गया है और जो मुहम्मद साहब को सहज प्राप्त था।

सबदै मारी सबदँ जिलाई ऐसा महमंद पीरं।
ताकै भरम न भूलौ काजी सो बल नहीं सरीरं।।

गोरखनाथ ने नाथपंथी योगियों एवं इस्लाम के अनुयायियों को एक साथ चेताया और कहा कि 'नाथ' शब्द रटने से कोई बन्धन मुक्त नही हो सकता, 'गोरख' का नाम लेने से आध्यात्मिक तत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती, इसी प्रकार 'कलमा' के उच्चारणा मात्र से काम नहीं चल सकता अपितु उससे अन्तर्जीवन का मर्म प्रकाशित करना चाहिए। मुहम्मद साहब द्वारा प्राकट्य किया गया कलमा दिव्य शक्ति प्रदाता, आध्यात्मिक जीवनदाता पवित्र वचन है। कलमा अमर है, अक्षर है, परमात्मतत्त्व का प्रकाशक है–

नाथ कहंतां सब जग नाथ्या गोरष कहता गोइ।
कलमा का गुर महंमद होता पहलैं मूवा सोइ।।

गोरखनाथ ने हिन्दू–मुसलमान सभी को योग–मार्ग पर एक साथ चलने का उपदेश दिया। हिन्दुओं योगियों, पीरों, काजियों, मुल्लाओं को कहा कि सभी उस योग–मार्ग पर चलो और योग साधना करों, जिसको ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव ने भी अपनाया।

उतपति हिन्दु जरणां जोगी अकलि पीर मुसलमानी।
ते राह चीन्हों हो काजी मुलां ब्रह्मा, बिस्न, महादेव मानी।।

गोरखनाथ ने हिन्दू–मुस्लिम एकता का एकाकर रूप योग एवं योगी में प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दू अपने भगवान को मन्दिर में खोजता है, जबकि मुसलमान मस्जिद में। परन्तु योगी के लिए यह परम पद सर्वत्र है। मन्दिर–मसजिद सब जगह उसे परमात्मा का सहज बोध सुलभ होता है। राम और खुदा घर–घर में व्याप्त है।

हिन्दू ध्यावै देहुरा मुसलमान मसीत।
जोगी ध्यावै परम पद जहां देहुरा न मसीत।।
हिन्दू आर्ष अलष कौं तहाँ राम अछै न षुदाइ।।

गोरखनाथ ने धर्म ग्रन्थों पर अपनी दृष्टि साफ करते हुए कहा कि काजी और मुल्ला 'कुरान' को मानते है, मंत्रद्रष्टा ब्रह्मज्ञानी वेदों को तथा कापड़ी और सन्यासी तीर्थ यात्रा को। जबकि परमपद मात्र पुस्तक ज्ञान एवं तीर्थ–भ्रमण से नहीं अपितु साधना से मिलता है।

काजी मुलां कुराणं लगाया, ब्रह्म लगाया वेदं।
कापड़ी संन्यासी तीरथ भ्रमाया न पाया नष्बांण पद का भेवं।।

हिन्दू–मुस्लिम एकता या यों कहें सभी को एक समान मार्ग पर चलने का उपदेश नाथपंथ की पूरी योग–परम्परा में प्राप्त होता है। नाथपंथ की योग–परम्परा सगुण–निर्गुण सभी प्रकार की उपासना पद्धतियों का समवेत–स्वर है। यही समवेत स्वर सूफी परम्परा में प्रतिबिम्बित हुआ। भारत में सूफी मत नाथपंथ की इसी हिन्दू–मुस्लिम एकता के विचार–दर्शन का प्रतिफलन है।

नाथपंथ की योगी–परम्परा मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन, सूफी परम्परा, हिन्दू–मुस्लिम एकता के मार्ग को प्रशस्त करती हुयी भारत के स्वतन्त्रता–संग्राम को भी धार देती रही। अरब आक्रमण के विरूद्ध योगी सेना का गठन, 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में सूचना–तन्त्र एवं खुफिया तन्त्र के रूप में भूमिका तथा 1857 से लेकर 1947 तक के भारतीय स्वाधीनता संग्राम में विविध भूमिकाओं के निर्वहन में नाथपंथी योगियों का योगदान अप्रतिम है।

नाथपंथ की परम्परा ने आजाद भारत में शिक्षा–चिकित्सा को सेवा का आधार मानकर इसके प्रतिमान खड़े करने का प्रयत्न किया हैं। सामाजिक परिवर्तन का अलख जगाया है। भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक आन्दोलनों का केन्द्र नाथपंथ का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र उत्तर प्रदेश के गोरखपुर का गोरखनाथ मन्दिर रहा है। श्री गोरखनाथ मन्दिर की भूमिका ऐसे धार्मिक केन्द्र की है जो सामाजिक जन–जागरण, सांस्कृतिक पुनर्जारण, शैक्षिक उन्नयन के साथ–साथ गरीबों, दलितों, पीड़ितों, असहायों को जीवन जीने की राह दिखाता हो।

इस प्रकार नाथपंथ ने योग, अध्यात्म एवं साधना के बल पर भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने में अद्वितीय भूमिका निभायी है।